International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 11 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

परीक्षा गुरू का वर्ण्य विषय

नीरज कुमार
हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

'परीक्षा गुरू' सामाजिक यथार्थ की चेतना का उपन्यास है। इस उपन्यास में अपने काल के भारतीय जीवन में आने वाले विकृत्तियों उनसे उत्पन्न कुछ समस्याओं का चित्रण है तथा उनका कोई समाधान खोजा गया है। 'परीक्षा गुरू' इस प्रकार की सामाजिक चेतना का चित्रण करने वाला पहला उपन्यास है। यह सामाजिकता ही वास्तव में आधुनिक साहित्य को पिछले साहित्य से अलगाती है। यही साहित्य को सामान्य जनजीवन के समीप लाती है।

'परीक्षा गुरू' में मदनमोहन, ब्रजकिशोर, चुन्नी लाल, शिंभूदयाल, हरकिशोर मध्यवर्ग से सम्बन्धित हैं। परीक्षा गुरू के पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार ने नये युग का सन्देश दिया है। **इस उपन्यास के पात्र न तो राजा–महाराजा हैं, न गरीब किसान हैं।** अधिकांश पात्र **दिल्ली शहर के मध्यवर्ग के परिवारों से सम्बन्धित हैं।** ब्रजकिशोर आदर्श पात्र है, जिसे लेखक ने वकील के रूप में वर्णित किया है। इस युग में राष्ट्रीय आन्दोलन तथा सामाजिक आन्दोलन का सूत्रधार यह मध्यवर्गीय शिक्षित वकील समुदाय माना जाता था जिसका ब्रजकिशोर प्रतिनिधित्व करता है।

मध्यवर्ग की आर्थिक दशा का वर्णन विस्तार से 'परीक्षा गुरू' में मिलता है। **लेखक ने मध्यवर्ग के आर्थिक दुर्दशा का कारण प्रदर्शनप्रियता को माना है।** मदनमोहन की स्थिति का वर्णन करता हुआ लेखक कहता है– ''समय बदल गया। इस समय मदन मोहन के विचार और ही हो रहे हैं, जहाँ देखो अमीरी ठाठ, अमीरी कारखाने। बैठक का सामान अंग्रेजी चाल का बनवाया गया है। साहब लोगों की चिट्ठियाँ नित्य आती हैं। अंग्रेजी तथा देशी अखबार और मासिक पत्र बहुत–से लिए जाते हैं और उनमें–से खबरें कोई देखे या ना देखे परन्तु सौदागरों के इश्तेहार अवश्य देखे जाते हैं।''[1] इस प्रकार मध्यवर्गीय आडम्बरपूर्ण तथा प्रदर्शन से भरे हुए जीवन का चित्र लेखक ने प्रस्तुत किया है। यह प्रदर्शन की भावना मध्यवर्ग को कितना स्वार्थी बना देती है इसका वर्णन लेखक ने हरकिशोर के माध्यम से किया है। हरकिशोर मदनमोहन से कहता है– ''मैं गरीब, आप अमीर, मैं दिनभर पैदल भटकता हूँ, आप सवारी बिना एक कदम नहीं चलते, मेरे रहने की एक झोंपड़ी, आपके बड़े–बड़े महल, मुल्क में अकाल हो, गरीब बेचारे भूखों मरते हों, आपके यहाँ दिन–रात हो ही हा–हा,

ही–ही रहेगी––––– परमेश्वर ने आपको मानमानी मौज करने के लिए दौलत दे दी फिर औरों के दुःख दर्द में पड़ने कि जरूरत आपको क्या रही?''[2]

लेखक समकालीन यथार्थ को तत्कालीन परिवेश में चित्रित किया है। इस परिवेश में कुछ विदेशी व्यापारी, भिन्न–भिन्न पेशों के लोग तथा इन सब के आपसी संबन्ध और रंग–रंग, कचहरी हवालात, रईसी दरबार, इनसे सम्बन्धित घटनाएँ और प्रसंग आए हैं। इस समूचे परिवेश–चित्रण में लेखक की दृष्टि आलोचनात्मक रही है। वह यथार्थ के सद्–असद् रूप की पहचान भी उभारता चला है। उसके सामने यथार्थ का जो चरित्रगत या परिस्थितिगत रूप रहा है वह संश्लिष्ट और गहरा न होकर इकहरा तथा स्फीत है, दूसरे जो यथार्थ है वह उपदेशमूलक घानी नैतिकतावादी आलोचनात्मक स्वर से सम्पन्न होने के कारण और भी स्फीत हो उठता है। नैतिकता–मूलक उपदेशवादिता उपन्यास की औपन्यासिक संरचना से तो उभरती ही है, हर अध्याय के शीर्षक से उसके आरंभ में दिये गये दोहे या कविताओं से, हर प्रसंग के साथ संवाद के माध्यम से देश–विदेश की कहानियों और घटनाओं के उदाहरणों से सद्पात्रों द्वारा जगह–जगह की गई सामाजिक आलोचनाओं से व्यक्त होती है। इसलिए यथार्थ के घटित होने की अपेक्षा नैतिकतामूलक उपदेश के कथित होने की मात्रा अनुपात में ज्यादा हो उठी है। और इसलिए उपन्यास अपनी संरचना में काफी शिथिल और प्रभाव में कमजोर पड़ गया है। उनकी पठनीयता भी आहत हो उठी है। पात्रों के संवाद में दृष्टांत रूप में बार–बार कविता और कथाओं का उभरना पुरानी उपदेश–प्रधान कहानियों का स्मरण दिलाता है। इसमें हमारे समाज को बर्बाद करने वाले अनेक दोषों–जुआ, शराब, वेश्या, मृत्य, झूठा प्रदर्शन, चाटुकारिता–प्रेम आदि का पर्दाफाश करते हुए सच्ची राह पर चलने की शिक्षा दी गई है।

''लेखक देश की अवनति के मूल में हीन चरित्र और हीन वृत्ति को मानता है। ब्रजकिशोर के माध्यम से लेखक ने मनोविज्ञान की कुछ गहराई में जाकर मन की वृत्तियों और चरित्रों का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का इसे एक सूत्र कहा जा सकता है।''[3]

इसमें विपत्ति–परीक्षा को मार्ग–दर्शक या शील–सुधार गुय सिद्ध किया गया है। परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो इस उद्देश्य से मात्र उस सूत्र का काम लिया गया है, जो अन्य अनेक उपदेशों–निदेशों को बाँधे हुए हैं। मदनमोहन के स्वार्थी मित्र अपने को संवारने के लिए उसको बिगाड़ते हैं। उनको बिगाड़ने के लिए जो–जो साधन अपनाए जाते हैं जैसे– फिजूलखर्ची, विषयाशक्ति, सुरा, वैश्या, जुआ, म्यूनिसिपल कमेटी की मेम्बरी आदि उन्हीं को लेकर लेखक ने विभिन्न प्रकरण–सौदागर की दुकान और संगति का फल, विषयासवत,

सुरा, प्रबन्ध और सज्जनता आदि लिख दिए हैं। सच्चे मित्र ब्रजकिशोर के द्वारा इन कुरीतियों के निवारण का प्रयत्न किया गया है। इस तरह लेखक को समाज की कुरीतियों को दिखाने तथा उनसे समाज को बचाने का अवसर मिल गया है। पर यहाँ सूत्र परीक्षा को गुरू सिद्ध करने का ही है क्योंकि **लेखक स्थान–स्थान पर यह स्पष्ट करता गया है कि बिगाड़ने वाले स्वार्थी मित्र परीक्षा ही सच्चे या स्वार्थी मित्र का निर्णय कर सकेगी।** तातर्प्य यह हे कि लेखक ने कुशलतापूर्वक देशदशा का व्यापक परिचय भी दिया और उनकी एक उद्देश्य के सूत्र में भी ग्रंथित कर दिया। एक उद्देश्य के अन्तर्गत अन्य अनेक उद्देश्यों की चर्चा से उपन्यास से सारभूत उद्देश्य–सूत्र में पिरोने से उपन्यास में सम्बद्धता–एकता का प्रयास किया गया। स्वार्थी मित्र के संघर्ष का लक्ष्य उपन्यास का नायक है। उसी को बिगाड़ने–सुधारने का उद्देश्य नायक के शील–विकास से सम्बद्ध रहता है। इससे चरित्र–चित्रण तथा उद्देश्य को एकान्वित करने का प्रयास है। अतः लेखक ने उद्देश्य की अभिव्यक्ति में भी कौशल से काम अवश्य लिया हे, चाहे इसमें सफलता सीमाओं में ही मिल सकी है।

'परीक्षा गुरू' उपदेश–निवेश के बाहुल्य और सुधारवाद की दृष्टि से आदर्शवादी है, लेकिन बदलते हुए भारतीय समाज का यथार्थ परिचय देने में, कथा–पात्रों के चुनाव में, स्थानानुकूल भाषा–शैली की व्यवस्था में यथार्थपरकता का प्रभाव डालता है। यह गौरव की बात है कि हिन्दी के पहले उपन्यासकार ने सामाजिक क्षेत्र में उपलब्ध सामग्री का पर्याप्त उपयोग किया तथा सामायिक देशकाल में, चित्रण के साथ सामयिक 'संसारी' कथा को नाटकीय कौशल से विन्यत करने का प्रयास किया आलौकिक असम्भव घटनाओं से कौतूहल जागृत करने के कृत्रिम तरीकों से काम नहीं लिया। यहाँ यथार्थ–आदर्श का समन्वय चाहे न हो, पर दोनों के सामांजस्य का प्रयास अवश्य मिलता है।

'परक्षा गुरू' की मौलिक विशेषता यही है कि उसमें सर्वप्रथम यथार्थ जीवन–व्यापारों को कथा का विषय बनाया गया है। न तो उसमें परंपरित ढ़ंग की कोई प्रेम कहानी है और न विस्मयकारक घटना–विधान। **तत्कालीन मध्यवर्गीय समाज तथा उसमें पलनेवाले कतिपय व्यक्तियों का वास्तविक चित्रण ही इसका ध्येय है। कथानक मदनमोहन नई सभ्यता से अभिभूत एक नवयुवक व्यापारी है।** वह खुशामदी मित्रों के चक्कर में पड़कर नये तड़क–भड़क और दिखावे में सारी पैत्रिक पूँजी नष्ट कर डालता है। ऋण न चुका सकने के कारण उसे हवालात की सैर करनी पड़ती है। उस विपत्ति के समय में उसका सच्चा मित्र बृजकिशोर उसकी सहायता करता है और उसी के दिखाए मार्ग पर चलकर वह पुनः अपनी स्थिति को संभाल लेता है। यह विपत्ति–परीक्षा ही उसका प्रकाश दर्शक गुरू होती है।

इस उपन्यास के सभी पात्र विभिन्न वर्गों के प्रतीक हैं। मदनमोहन का पिता पुराने ढ़ंग का धर्मभीरू, व्यवहारकुशल एवं नीति–परायण व्यक्ति था। उसकी स्त्री आदर्श भारतीय पत्नी है। वह स्वयं, अंग्रेजी सभ्यता के ऊपरी रूप की नकल करने वाला, तड़क–भड़क तथा दिखावे का प्रेमी, झूठी खुशामदों में रस लेने वाला, व्यवहार–ज्ञान से अनभिज्ञ, थोड़ी अंग्रेजी पढ़े हुए नवयुवकों की कमजोरियों का प्रतीक–सा है। उसके स्वार्थी, चापलुस मित्र मुफ़्तखोरे भाइयों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बृजकिशोर नई रोशनी का होते हुए भी अपनी सभ्यता संस्कृति पर गर्व करने वाला समझदार एवं सतर्क व्यक्ति है। इन विभन्न वर्गीय पात्रों के माध्यम से लेखक ने तत्कालीन समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों का सुन्दर संकेत दिया है। स्थान–स्थान पर बृजकिशोर के द्वारा लेखक ने **कतिपय वैयक्तिक, परिवारिक, सामाजिक तथा देश–सम्बन्धी समस्याओं पर अच्छा प्रकाश डाला है।** जिससे यह प्रकट होता है कि समझदार एवं देश–भक्त व्यक्तियों की दृष्टि सामाज की बुराइयों तथा देश की अवनति की ओर गई थी और वे इसके कारण एवं निराकरण पर विचार करने लग गए थे। **जन–जागरणवादी उपन्यासों की जिस परम्परा का विकास प्रेमचन्द ने किया था उसका उद्‌गम 'परीक्षा गुरू' में देखा जा सकता है।**

लेखक ने प्रस्तावना में इसका 'नई चाल' की पुस्तक घोषित की है, क्योंकि इसमें **नाटकीय वर्णन–कौशल** का अनुसरण करके 'सिलसिलेवार' कथा–कथन की भारतीय परिपाटी का परित्याग किया गया है। लेखक अंग्रेजी का अच्छा जानकार था और उसने अंग्रेजी उपन्यासों को दृष्टि में रखकर ही यह 'नई चाल' की पुस्तक लिखी होगी। अंग्रेजी उपन्यास के यथार्थ वर्णन–कौशल को लाला–श्रीनिवासदास ने अपनाने का प्रयास किया। वस्तु, चरित्र, संवाद एवं वातावरण सभी में यथार्थता लाने का आग्रह स्पष्ट है। '''परीक्षा गुरू' की शैली, नवीन है, जिसपर अंग्रेजी प्रभाव अधिक है। लेखक स्वयं पृष्ठभूमि में रहकर पात्रों के पारस्परिक कार्य एवं कथोपकथन द्वारा कथा एवं चरित्रों का विकास दिखाता जाता है। उसकी यह शैली नाटकीय है, यदपि उसने नाटक की 'रीति' से इस 'नवीन रीति' का भेद किया है फिर भी यह मानने में कोई आपत्ति नहीं होगी कि उस काल में नाटक का शासन था इसलिए उपन्यास–साहित्य पर नाटक का प्रभाव है, 'परीक्षा गुरू' भी इस नियम का समर्थक है।''[4]

मदनमोहन की स्त्री अपने पति की सच्ची प्रतिमान, शुभचिंतक, सुख–दुःख की साधन, और आज्ञा में रहनेवाली थी और मदनमोहन भी प्रारंभ में उससे बहुत ही प्रीति रखता था। परन्तु जब वह चुन्नीलाल और शिंभूदयाल आदि नए मित्रों की संगति में बैठने लगा, नायरंग की धुन लगी, वेश्याओं के झूठे हावभाव देखकर लोट–पोट हो गया। ''अय! सुभान उल्लाह! क्या जोवन खिल रहा है।'' ''वल्लाह! क्या बहार आ रही है!''

''चश्मबद्दूर क्या भोली–भाली सूरत है!'' ''अय! परे हटा!'' ''मैं सदके! मैं कुर्बान मुझे न छेड़ो!'' ''खुदा की कसम! मेरी तरफ तिरछी नज़र से न देखो!'' बस यह चोंचले की बातें चित्त में चुभ गई। किसी बात का अनुभव तो था ही नहीं, तरूणाई की तरंग, शिंभूदयाल और चुन्नीलाल आदि की संगति, द्रव्य और अधिकार के नशे में ऐसा चकनाचूर हुआ कि लोक–परलोक की कुछ खबर न रही।''[5]

फिर भी उपन्यास स्पष्टतः सोद्देश्य है और इसमें उपदेश–वृत्ति की ही अधिकता है। आधी पुस्तक से अधिक भाग में **संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी के ग्रन्थों से उपदेशप्रद उदाहरण अथवा नैतिकशिक्षा देने वाली कथाओं की योजना है।** इससे पता चलता है कि यद्यपि लेखक ने विषय–निर्वाचन एवं वस्तु वर्णन में अंग्रेजी उपन्यासों का अनुकरण करने का प्रयास किया, फिर भी यह कथा–माध्यम से उपदेश देनेवाली भारतीय परम्परा को एकदम छोड़ न सके। कहीं–कहीं तो इस पूरा प्रकरण धारावाटी शिक्षाप्रद संवादों से भरा है। उसकी गति शिथिल पड़ी है और पाठक का जी ऊबने लगता है। इस त्रुटि से शायद लेखक भी परिचित था और इसलिए ऐसे स्थानों को उसने चिन्हित किया है और निवेदन में बता दिया है कि पाठक चाहे तो इन्हें छोड़कर कथा को सिलसिलेवार पढ़ सकता है। यह भी जान लेना चाहिए कि इस पुस्तक को लिखने में लेखक को ''महाभारतादि, संस्कृत, गुलिस्ताँ वगैरे फारसी, स्पेवटेटर लार्ड बेकन, गोल्डस्मिथ, विलियम कपूर आदि ने पुरानी लेखों और स्त्री–बोध आदि के वर्तमान रिसालों से बड़ी सहायता मिली है।''[6]

'पूर्णप्रकाश और चन्द्रभा' की ही भाँति इस उपन्यास के भी प्रकरणों के आरंभ में गद्य या पद्य के कुछ वाक्य सूक्ति–रूप में प्रस्तुत किये गए हैं। उदाहरण के लिए पहले, दूसरे प्रकरणों को इन पंक्तियों से आरंभ किया गया है–

(क) 'चतुर मनुष्य को जितने खर्च मैं अच्छी प्रतिष्ठा अथवा धन हो सकता है, मूर्ख को उस्सै अधिक खर्चेनें पर पर भी कुछ नहीं मिलता।'– लार्ड चेस्टर फील्ड।

(ख) अप्रापति के दिनन मैं खर्च होत अविचार।
घर आवत है पाठुनो बणिज न लाभ लगार।। (वृंद)

'परक्षा गुरू' में दिल्ली के एक कल्पित धनाठ्य व्यक्ति की कथा है। जैसा की इस युग के कुछ अन्य उपन्यासों के विषय में कहा गया है, इस उपन्यास में भी प्रत्येक प्रकरण के आरंभ में तथा मध्य और अन्त में भी कहीं–कहीं विविध पद्य–उद्धरण तथा नीति वाक्य अथवा सूक्ति रूप में कुछ गद्य–उद्धरण दिये गए हैं। उदाहरण के लिए प्रथम प्रकरण में लेखक ने लिखा है– 'चतुर मनुष्य को जितने खर्च मैं अच्छी प्रतिष्ठा अथवा

धन मिल सकता है मूर्ख को उस्से अधिक खर्चनें पर भी कुछ नहीं मिल्ता– लार्ड चेस्टर फील्ड।' यों तो लेखक ने निवेदन में यह स्पष्ट कर दिया हे कि इस पुस्तक रचना करते समय संस्कृत के महाभारत आदि, फारसी के गुल्सिताँ वगैरह तथा अंग्रेज के स्पेष्टेटर, लार्ड बेकन, गोल्डस्मिथ, विलियम कपूर आदि के पुराने लेखों से सहातयता ली गई है। प्रारम्भ में लाला मदनमोहन, लाला ब्रजकिशोर, मुंशी चुन्नीलाल तथा मास्टर शम्भूदयाल के एक अंग्रेजी सौदागर की दुकान पर जाकर माल खरीदने से इस उपन्यास का प्रथम प्रकरण शुरू हुआ है। बीच में बातचीत के दौरान एक दोहा इस प्रकार कहा गया है–

धनी दरिद्री सकल जन हैं जग के अधीन।
चाहत धनी विशेष कछु तासों ते अति दीन।

लाला मदनमोहन और अंग्रेज व्यापारी की बातचीत से कथा का यह प्रारंभिक सूत्र आगे बढ़ता है। किन्तु लेखक स्वयं वार्तालाप से संतुष्ट न होकर अनावश्यक रूप से पंक्तियाँ जोड़ देता है।– 'इस बचन मैं मिस्टर ब्राइट अपने अस्बाब की खरीदारी के लिए लाला मदनमोहन को ललचाता है परन्तु अपने रूपै वास्ते मीठा तकाजा भी करता है। चुन्नीलाल और शिंभूदयाल के कारण उसको मदनमोहन के लेन–देन में बहुत कुछ फायदा हुआ परन्तु उसके पचास हजार रूपे इस समय मदनमोहन की तरफ बाकी हैं और शहर मैं मदनमोहन की बाबत तरह–तरह की चर्चा फैल रही है बहुत लोग मदनमोहन को फिजूल खर्च, दिवालिया बताते हैं और हकीकत मैं मदनमोहन का खर्च दिन पर दिन बढ़ता जाता है इस्सै मिस्टर ब्राइट को अपनी रकम का खटका है इसलिए उस्ने इन काँचों का सौदा इस्समय अटकाया हे और तीसरे पटहर मास्टर शिंभूदयाल को अपने पास बुलाया है।'

उपन्यास के बीच–बीच में शेक्सपीयर तथा बायरन आदि कवियों के विविध प्रसंगों–अंशों के अनुवाद दिये गए हैं। इसी प्रकार मनुस्मृति, हितोपदेश आदि से भी कुछ अंश प्रस्तुत किए गए हैं। ''यह बात स्वीकार करनी होगी कि इस उपन्यास का कथानक इस युग में लिखे गये अन्य बहुत से उपन्यासों की अपेक्षा कहीं सुगठित है और उसका निर्वाह भी अपेक्षाकृत कलात्मक ढ़ंग से किया गया है यद्यपि स्वतंत्र रूप से देखने में इसमें संगठनात्मकता का अभाव प्रतीत होता है।'' उपन्यास में भावमयता बहुत अधिक है और सामान्य रूप से प्रायः प्रत्येक प्राप्त किसी न किसी प्रसंग में कुछ न कुछ भावुक होकर कहने लगता है। उदाहरण के लिए इस उपन्यास का एक अंश में जब दो व्यक्तियों में किसी कारण से सन्देह उपजता है– 'तो र्क्या आपको इस्समय यह संदेह हुआ 'रूपै का दोस्त' और 'मतलब का दोस्त' ठैराया है? लाला मदनमोहन गिड़गिड़ाकर कहने लगे। 'हाय! आपने मुझको अबतक नहीं पहचनाना मैं अपने प्राण सै अधिक आपको सदा समझता रहा हूँ जिस्पर

आपको मेरी तरफ सै अब तक इतना सन्देह बना है मुझको आप इतना नादान समझते हैं। क्या मैं अपने मित्र और शत्रु को भी नहीं पहचानता? मैं अपना कलेजा चीरकर दिखाऊँ तो आपको मालूम हो कि आपकी प्रीति मेरे हृदय में कैसी अंकित हो रही है।'

इस तरह के भावुकतापूर्ण प्रसंग इतने अधिक हैं कि उनके कारण उसकी गंभीरता और ठोसपन समाप्त हो गया है। साथ ही प्रत्येक घटना की प्रभावात्मकता पर भी इसका असर पड़ा है। **इसमें प्रासंगिक वर्णन इस प्रकार हैं जिसका कोई न कोई सम्बन्ध मूल कथा से हैं और न वे कथानक के विकास में ही सहायक होते हैं।** बीच–बीच में प्रात्रगण वाल्मीकि की रामायण तथा पुराण आदि से इस प्रकार के उदाहरण देने लग जाते हैं कि चरित्र–विकास की दृष्टि से यह हास्यास्पद लगते हैं। उपन्यास के बीच में लेखक ने पूरा एक अध्याय चार–पाँच पत्रों का परिचय देने में व्यय किया है। और फिर पिछली कथा के विकास की ओर ध्यान दिया है। इस प्रकार के जितने भी परिचयात्मक अंश है, वे बहुत क्षीण हैं। प्रसंगवश यूरोपीय इतिहास की भी अनेक घटनाएँ अनावश्यक रूप में लिखी गई हैं।

समग्रतः हम कह सकते हैं कि 'परीक्षा गुरू' उपदेश–निवेश के बाहुल्य और सुधारवाद की दृष्टि से आदर्शवादी है किन्तु बदलते हुए भारतीय समाज का यथार्थ परिचय देने में, कथा पात्रों के चुनाव में, स्थानानुकूल भाषा–शैली की व्यवस्था में यथार्थपरकता का प्रभाव डालता है। इन्हीं विशेषताओं के साथ–साथ 'परक्षा गुरू' के कथानक में 'परीक्ष गुरू' का वर्ण्य विषय समाहित है।

शिल्प–विधान की दृष्टि से देखें तो यह स्पष्ट होता है कि श्रीनिवासदास न सिर्फ शिल्प–सजक उपन्यासकार थे बल्कि वे इस शिल्प के जागरूक व्याख्याता भी थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. परीक्षा गुरू– श्रीनिवासदास, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2014, पृष्ठ–49
2. वही, पृष्ठ–25
3. हिन्दी गद्य साहित्य : आधुनिक आयाम–रामदरश मिश्र, परमेश्वरी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–11
4. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास– डॉ० कैलाशप्रकाश, पृष्ठ सं०–99
5. परीक्षा गुरू – श्रीनिवासदास, लोभारती प्रकाशन, पृष्ठ–104
6. परीक्षा गुरू – श्रीनिवासदास, निवेदन, पृष्ठ संख्या– 125
7. हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव और विकास – डॉ० प्रतापनारायण टंडन, कल्पकार प्रकाशन, पृष्ठ–87